मन्द बुद्धि बालकों की उपलब्धि अभिप्रेरणा, ध्यान केन्द्रण एवं रचनात्मक क्रियाओं पर संगीत आधारित खेल विधि के प्रभाव का अध्ययन

दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट की
डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (शिक्षा) उपाधि की पूर्ति
के निमित्त प्रस्तुत शोध

अध्ययन की रूपरेखा

2015

शोध निर्देशिका

डॉ0 गुरप्यारी सतसंगी
(एसोसिएट प्रोफेसर)
डिपार्टमेंट ऑफ पेडागॉजिकल साइंसिस

शोधार्थी

सुलेखा

प्रो0 विभा निगम

विभागाध्यक्ष एवं संकाय प्रमुख
डिपार्टमेंट ऑफ पेडागॉजिकल साइंसिस
शिक्षा–संकाय

शिक्षा–संकाय
दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)
दयालबाग, आगरा

1.0.0. प्रस्तावना

बाल्यकाल बालक में प्रत्येक सम्भावना के विकास का एक विशिष्ट काल होता है। जिसका कारण बालकों की व्यक्तिगत विभिन्नतायें होती हैं। प्रत्येक बालक जैविक, मानसिक, सांस्कृतिक व संवेगात्मक रूप से भिन्न होता है। इस सन्दर्भ में फ्रांसिस गाल्टन, पियर्सन, कैटेल व टर्मन आदि मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्तिगत विभिन्नताओं का पता लगाया तथा उनके कारणों की खोज की। उनके अनुसार प्रत्येक बालक में व्यक्तिगत भिन्नता के विकासकाल भिन्न–भिन्न अवधि का होता है। यदि उचित समय पर इस सम्भावना को विकसित करने का प्रयत्न न किया गया तो उसके नष्ट हो जाने का भय रहता है। व्यक्तिगत विभिन्नताओं के कारण ही प्रकृति में कोई भी दो व्यक्ति समान नहीं होते। यहाँ तक कि जुड़वा बच्चों में भी असमानता पाई जाती है। इस दृष्टि से व्यक्तिगत भिन्नता प्रकृति द्वारा प्रदत्त एक स्वाभाविक गुण है। सभी प्रकार की शिक्षण संस्थायें प्राचीन काल से ही मानसिक योग्यताओं के आधार पर छात्रों में अंतर करती चली आ रही हैं।

व्यक्तिगत विभिन्नता का सीधा सा उदाहरण है जैसे कुछ बालक किसी कार्य को शीघ्र सीख लेते हैं और कुछ बालक उसी कार्य को सीखने में अपेक्षाकृत अधिक समय लगाते हैं। सीखने की गति में दो बालकों में प्रदर्शित यह भिन्नता उनकी व्यक्तिगत विभिन्नता के कारण ही होती है। साधारणतया प्रतिभाशाली बालक तेजी से सीखते हैं और मन्द बुद्धि बालक उसी कार्य को अनेक प्रयास करने पर देर से सीखते हैं।

1.0.0. समस्या की उत्पत्ति

जो बालक कक्षा में किसी तथ्य को बार–बार समझाने पर भी नहीं समझते हैं या औसत (सामान्य) बालकों के समान प्रगति नहीं कर सकते हैं, उन्हें हम मन्दगति से सीखने वाले बालक कह सकते हैं। मन्द बुद्धि बालक से तात्पर्य औसत से कम मानसिक योग्यता होना है। मन्द बुद्धि बालकों की बुद्धि लब्धि साधारण बालकों की बुद्धि लब्धि से कम होती है। बुद्धिलब्धि के आधार पर सामान्य बुद्धिलब्धि के नीचे वाले बालक पिछड़े या मन्द बुद्धि बाले कहलाते हैं। मन्द बुद्धि बालक मूढ़ होता है अतः उसमें सोचने, समझने और विचार करने की शक्ति कम होती है। इस संदर्भ में

क्रो एवं क्रो ने कहा है– ''जिन बालकों की बुद्धि लब्धि 70 से कम होती है, उन्हें मन्द बुद्धि बालक कहते हैं।'' मन्द बुद्धि बालकों की निम्नलिखित विशेषतायें होती हैं–

1. मन्द बुद्धि बालक सीखी हुई बात को नई परिस्थिति में प्रयोग नहीं कर पाते हैं।
2. मन्द बुद्धि बालक अक्सर कक्षा में पीछे बैठते हैं।
3. मन्द बुद्धि बालक कक्षा–कक्ष में अधिकतर शांत बैठे रहते हैं।
4. विद्यालय में असफलता के कारण उनमें निराशा उत्पन्न हो जाती है।
5. मन्द बुद्धि बालक संवेगात्मक और सामाजिक रूप से असमायोजित रहते हैं।
6. मन्द बुद्धि बालक मान्यताओं के सम्बन्ध में अटल विश्वास रखते हैं।

मन्द बुद्धि बालकों के सीखने की गति धीमी होने के कारण वे सामान्य बालकों के समान प्रगति नहीं कर पाते हैं वे धीरे–धीरे सीखते हैं और अनेक गलतियां करते हैं, जटिल परिस्थितियों को ठीक तरह नहीं समझते हैं, कार्य–कारण सम्बन्धों को समझने में साधारणतः असफल रहते हैं और अनेक कार्यों के परिणामों पर उचित विचार किये बिना बहुधा भावावेशपूर्ण व्यवहार करते हैं। मन्द बुद्धि बालक सीखने की गति मन्द होने के कारण कक्षा में अक्सर पिछड़ जाते हैं। बालकों के मन्दगति से सीखने के कारणों का सम्बन्ध उनके परिवार, विद्यालय एवं उसके अपने शारीरिक, मानसिक तथा सवेंगात्मक विकास के स्वरूप से होता है। मनुष्य आज श्रेष्ठतम् प्राणी बुद्धि के कारण ही समझा जाता है। बुद्धि अनेक गुणों का समुच्चय है। किसी भी व्यक्ति को बुद्धिमान या बुद्धिहीन तब तक नहीं कहना चाहिए, जब तक कि उसके व्यवहार में निहित बुद्धि के अनेक गुणों का निरिक्षण न किया जाये। बुद्धि के निर्धारण में वंशानुक्रम एवं वातावरण दोनों ही आधार स्वरूप कार्य करते हैं। अतः हम की सकते हैं के बुद्धि एक परिकल्पनात्मक शक्ति है। बुद्धि का व्यक्ति बहुधा उपयोग विभिन्न समस्याओं को समझने और उनका अधिगम करने में तो करता ही है, परन्तु बुद्धि का उपयोग जीव अपने दैनिक जीवन की छोटी–छोटी बातों से लेकर बडी–बडी बातों को समझने और उनके प्रति अनुक्रिया करने में भी करता है। इस सम्बन्ध में कुछ अधिक कहने से पहले आवश्यक है कि बुद्धि के अर्थ व स्वरूप को समझ लिया जाये। बुद्धि के अर्थ और स्वरूप के

सम्बन्ध में मनोवैज्ञानिकों में एकमत नहीं है फिर भी यह नीचे कुछ प्रचलित परिभाषाऐं देकर बुद्धि के अर्थ को समझाने का प्रयास किया गया है, वैश्लर तथा मैरिल द्वारा IQ वितरण निम्न हैः–

तालिका. 1. वैश्लर तथा मैरिल द्वारा IQ वितरण

IQ वितरण वैश्लर के अनुसार		**IQ वितरण मैरिल के अनुसार**	
IQ	**Description**	**IQ**	**Description**
130 or above	Very superior	140 or above	Very superior
120-129	Superior	120-139	Superior
110-119	Bright Average	110-119	Bright Average
90-109	Average	90-109	Average
80-89	Dull normal	80-89	Dull normal
70-79	Border line	70-79	Border line
Below-70	Mentally Retarded	Below-70	Mentally Retarded

उपयुक्त वर्गीकरण द्वारा यह स्पष्ट है कि सामान्य मनुष्यों में बुद्धिलब्धि स्तर भिन्न–भिन्न पाया जाता है। किन्तु मन्दबुद्धिता के कई स्तर हो सकते हैं। मन्दबुद्धि लोगों की बुद्धि प्रायः 90 I.Q. से कम होती है। जिन बालकों की बुद्धि 0–25 I.Q. तक होती है उन्हें जड़ बुद्धि कहते हैं। इतनी I.Q. वाले व्यक्ति अपने शरीर की सुरक्षा करने में समर्थ नहीं होते हैं एवं खाना, नहाना, कपड़े पहनना आदि कार्य भी अपने–आप नहीं कर पाते हैं। ऐसे बालकों की सुरक्षा की बहुत आवश्यकता होती है। दूसरे प्रकार के मन्दबुद्धि बाले वे होते हैं जिन्हें मूढ़ कहते हैं इनकी I.Q. 25–50 तक होती हैं। इस प्रकार के मन्दबुद्धि बालक अपने शरीर की थोड़ी बहुत देखभाल कर लेते हैं, थोड़ा बहुत बोलना सीख लेते हैं, नहाना धोना, खाना–पीना और कपड़े पहनने का कार्य भी सीख जाते हैं। ऐसे बालकों को यदि प्रशिक्षण दिया जाये तो यह मेहनत मजदूरी द्वारा अपनी जीविका चला सकते हैं। तीसरे प्रकार के मन्दबुद्धि बालक वे हैं, जिन्हें अल्प मूढ़ कहते हैं। इनकी I.Q. 50–70 तक होती है। ऐसे बालक यदि प्रशिक्षण प्राप्त कर लें तों यह साधरण दस्तकारी, ऑफिस में चपरासी या साधारण बढ़ईगीरी का कार्य कर सकते हैं। यदि सभी को एक–साथ एक–समान

शिक्षा प्रदान की जाये तो तीव्र सीखने वाले व मन्द गति से सीखने वाले दोनों ही प्रकार के बालकों के लिए यह उपयोगी शिक्षा पद्धति नहीं होगी। जहाँ तीव्र सीखने वाले व मन्द सीखने वाले बालकों की सीखने की गति में अन्तर अधिक होता है वहाँ शिक्षक के लिए चुनौती अधिक बढ़ जाती है। तीव्र गति से सीखने वालों के लिए तो शिक्षक उनके स्तर के अनुसार कठिन प्रश्न देकर, मॉनीटर बनाकर आदि क्रियायें कराकर व्यवस्थित कर लेते हैं लेकिन मन्द गति से सीखने वाले बालकों को सिखाना शिक्षक के लिए वास्तविक चुनौतीपूर्ण कार्य हो जाता है। इनके लिए योजना बनाने से पूर्व शिक्षक को उनकी पहचान का पता होना अत्यन्त आवश्यक है। मन्द बुद्धि बालकों की पहचान निम्नलिखित तरीकों से कर सकते हैं–

- मन्दगति बालक सूक्ष्म विषयों पर विशेष विचार नहीं कर सकते हैं। इसलिए व्याकरण, गणित तथा विज्ञान आदि विषयों में इनकी रुचि कम या नहीं होती है।
- ऐसे बालक परीक्षा में बार–बार अनुत्तीर्ण हो जाते हैं। अतएव अपनी आयु के अनुसार इन्हें जिस कक्षा में रहना चाहिए, उससे छोटी कक्षा में पढ़ते हुए पाये जाते हैं।
- मन्द गति बालक बौद्धिक कार्यों की अपेक्षा शारीरिक कार्यों में अधिक रुचि लेते हैं।
- ये बालक अपने आवेगों को रोक सकने में असमर्थ होते हैं।
- ये बालक दूसरों से बातचीत करते समय कहते कम हैं और सुनते अधिक हैं।
- इन बालकों में आत्मविश्वास का अभाव होता है।
- ऐसे बालकों की संकल्प शक्ति बड़ी निर्बल होती है। इसलिए ये किसी बात का दृढ़ निश्चय नहीं कर पाते हैं।

बालकों के मन्दगति से सीखने के कारणों का सम्बन्ध उनके परिवार, विद्यालय एवं उसके अपने शारीरिक, मानसिक तथा संवेगात्मक विकास के स्वरूप से होता है। इन बालकों के लिए विशेष प्रकार की शिक्षण विधियों का प्रयोग करना उपयुक्त है। ऐसे बच्चों का पाठ्यक्रम अधिक से अधिक लचीला होना चाहिए। इस प्रकार मन्दगति बच्चों के शिक्षण के लिए शिक्षक को निम्नांकित विधियों पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है–

- सरल एवं रुचिकर शिक्षण विधि।
- सहायक सामग्री का प्रयोग।
- पढ़ाने की गति धीमी हो।
- मौखिक शिक्षण–विधि का कम प्रयोग।
- करके सीखने पर अधिक बल।
- अर्जित ज्ञान का निरन्तर अभ्यास।
- नैतिक शिक्षा पर बल।
- गृहकार्य की जांच एवं संशोधन पर बल।
- शिक्षण में 'खेल–विधि' का प्रयोग।
- भौगोलिक, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक स्थानों का समय–समय पर भ्रमण।
- पढ़ाते समय कक्षा में उन्हें आगे बैठाकर उनके कार्यों का निरीक्षण, आवश्यकतानुसार सहयोग एवं प्रोत्साहित करना।

मन्द गति के बालक की रुचियों और क्षमताओं के अनुसार संगीत (नृत्य, वादन एवं गायन), ड्राइंग और अभिनय की शिक्षा दी जानी चाहिए। नैतिक गुणों के विकास के लिए वीर महान पुरुषों एवं महिलाओं की कहानियों को नाटकों के रूप में बच्चों के सामने प्रस्तुत करना चाहिए। इन्हें हस्तशिल्प में कताई–बुनाई, जिल्दसाजी, टोकरी बनाना, धातु एवं लकड़ी का काम, सिलाई, भोजन बनाना, गृह विज्ञान से सम्बन्धित सरल कार्यों की शिक्षा दी जा सकती है। इससे धीमी गति से सीखने वाले बच्चों की समस्याओं को सुलझाया जा सकता है।

1.1.1. उपलब्धि अभिप्रेरणा की संकल्पना

सीखने के संदर्भ में उत्तेजना को अभिप्रेरणा की संज्ञा दी जा सकती है। क्योंकि सीखने की क्रिया उद्दीपन के अभाव में संभव नहीं है। शिक्षक कक्षा–कक्ष में अनेक प्रकार के उद्दीपनों का प्रयोग कर बालकों का ध्यान आकर्षित करने का प्रयास करता है। शिक्षक द्वारा बालकों का

ध्यान आकर्षित करने की यह क्रिया उपलब्धि अभिप्रेरणा होती है। उदाहरणार्थ छोटे बालक को टॉफी का लालच देकर सीखने हेतु उत्तेजित करना। यहां पर टॉफी बाह्य अभिप्रेरणा है जो बालक में सीखने का मार्ग प्रशस्त करेगी।

अभिप्रेरणा दो प्रकार की होती है– 1. आंतरिक अभिप्रेरणा व 2. बाह्य अभिप्रेरणा। शिक्षक कक्षा–कक्ष में आंतरिक व बाह्य अभिप्रेरणा का समय–समय पर प्रयोग करते रहते हैं। इसी प्रकार की एक बाह्य अभिप्रेरणा है संगीत।

संगीत मन को शांति प्रदान करता है, अनावश्यक दबाव को हटाने का कार्य करता है और मन में स्फूर्ति लाता है जिससे अध्ययन रुचिकर हो जाता है। यह एक प्रकार से बाह्य अभिप्रेरणा का कार्य करता है। विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने अध्ययनों द्वारा स्पष्ट किया है कि यदि उच्च उपलब्धि प्राप्त करने वाले और निम्न उपलब्धि प्राप्त करने वाले बालकों को एक समान पुरस्कार प्रदान किये जायें तो निम्न उपलब्धि प्राप्त करने वाला विद्यार्थी थोड़े समय के लिए तो उन्नति करने लगता है परन्तु बाद में दोनों बाह्य प्रेरक के लिए कार्य करने लगते हैं। अतः शिक्षक आवश्यकतानुसार उपलब्धि अभिप्रेरणा का उचित समय पर प्रयोग कर मन्द बुद्धि बालकों की सीखने की गति बढ़ाने का प्रयास करे तो कुछ हद तक सफलता संभव है।

1.1.2. ध्यान केन्द्रण की संकल्पना

ध्यान विद्यार्थियों के सीखने के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण क्रिया है। ध्यान सीखने की क्रिया का पहला चरण होता है। जिस ओर बालक का ध्यान होता है वह उसी वस्तु को सीखता है। अतः अध्यापक शिक्षण के दौरान विभिन्न प्रकार की क्रियायें, हाव–भाव प्रदर्शन, सहायक सामग्री का प्रयोग, प्रश्न पूछना, उदाहरण देना आदि अनेक क्रियायें बालकों का ध्यान आकर्षित करने के लिए ही करता है।

जीवन के प्रत्येक क्षण में हम अनेक वस्तुओं को देखते हैं, उनके विषय में सुनते, विचार करते और अनुभव करते हैं। इनमें से हम कुछ बातों को स्पष्ट रूप से मस्तिष्क में स्थान नहीं दे पाते। उदाहरण– बाग में घूमते समय पूरे वातावरण की ओर हमारा ध्यान रहता है परन्तु किसी

एक वस्तु की ओर अधिक ध्यान रहता है जैसे नाना प्रकार के फूलों को देखने पर भी सुन्दर गुलाब की ओर अधिक ध्यान दे दिया जाता है। हम अपनी चेतना को गुलाब की ही ओर केन्द्रित कर लेते हैं। किसी वस्तु पर इस प्रकार चेतना को केन्द्रित करने को ही ध्यान कहते हैं। दूसरे शब्दों में–किसी वस्तु या व्यक्ति पर चेतना को केन्द्रित करने की प्रक्रिया को ध्यान (अवधान) कहते हैं।

डमविल के अनुसार–"किसी दूसरी वस्तु की अपेक्षा एक ही वस्तु पर चेतना का केन्द्रीकरण अवधान है।"

मंद बुद्धि बालक प्रारंभ से ही संकोची स्वभाव के होते हैं। वे जल्दी कुछ पूछते नहीं हैं और न ही शिक्षक द्वारा पूछे गये प्रश्नों पर अपनी प्रतिक्रिया ही प्रदर्शित करते हैं। ऐसी स्थिति में यदि उनका ध्यान अधिगम क्रियाओं की ओर आकर्षित न किया जाये तो वे सीखने से वंचित रह जायेंगे। आधुनिक मनोवैज्ञानिकों के अनुसार, अवधान में सचेत जीवन के तीन पहलू होते हैं– जानना, अनुभव करना और इच्छा करना। किसी कार्य के प्रति ध्यान देते समय हमें उसका ज्ञान रहता है। हम रुचि के रूप में किसी भावना या संवेग से प्रेरित होकर उसे करने में ध्यान लगाते हैं। जितनी देर हमारा ध्यान उस कार्य में लगा रहता है, उतनी देर हमारा मस्तिष्क क्रियाशील रहता है। भाटिया ने लिखा है, ''अवधान–ज्ञानात्मक, क्रियात्मक और भावात्मक होता है।'' ध्यान की मुख्यतः दो दशायें होती हैं– 1. बाह्य दशायें, 2. आंतरिक दशायें।

जे.एस. रॉस ने ध्यान का वर्गीकरण निम्नलिखित प्रकार किया है–

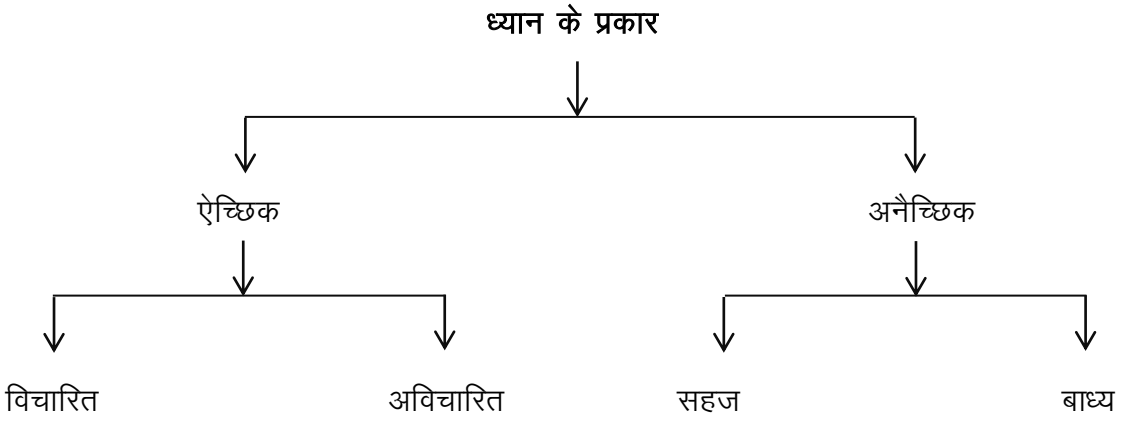

ऐच्छिक ध्यान अर्जित अभिरुचि पर आधारित होता है। इसमें जब हम अच्छी तरह विचार कर किसी विचार या वस्तु पर ध्यान केन्द्रित करते हैं तो वह सुविचारित ध्यान कहलाता है और जब कोई विचार नहीं करना होता है तो अविचारित ध्यान कहलाता है।

अनैच्छिक ध्यान जन्मजात अभिरुचियों पर निर्भर करता है। इसमें व्यक्ति का ध्यान किसी वस्तु पर केन्द्रित हो जाता है। सहज ध्यान मूल प्रवृत्तियों पर आधारित होता है तथा बाध्य ध्यान में बाध्यता प्रमुख होती है। बालकों का ध्यान केन्द्रित करने हेतु अनेक उपाय करने होते हैं। इस सन्दर्भ में बी.एन.झा. ने कहा है, ''विद्यालय–कार्य की एक मुख्य समस्या सदैव अवधान की समस्या रही है। इसीलिए, नए शिक्षक को प्रारम्भ में यह आदेश दिया जाता है कि कक्षा के अवधान को केन्द्रित रखिए।'' इस हेतु निम्नलिखित क्रियाओं का आयोजन किया जा सकता है।

- विषय के अनुकूल कक्षा का शान्त एवं सीखने योग्य वातावरण।
- सहायक सामग्री का समुचित प्रयोग।
- विषय में नवीनता तथा उसका प्रभावशाली शिक्षण।
- पुराने ज्ञान को नवीन ज्ञान से जोड़ना।
- बच्चों को स्वयं सीखने का अवसर देना।
- उपयुक्त शिक्षण विधियों का प्रयोग ।

शिक्षक ध्यान परीक्षण के लिए अनेक क्रियायें करते रहते हैं जैसे–

- पढ़ाते समय बीच में छात्रों से अचानक प्रश्न पूछना।
- मौखिक निर्देशों का अनुपालन कराकर।
- ऐसे खेल खिलवाना जिसमें ध्यान की विशेष आवश्यकता होती है जैसे– कुर्सी दौड़।
- भ्रमण पर ले जाकर लौटने पर उनसे देखी हुई वस्तुओं के नाम पूछना।
- श्यामपट्ट पर कुछ अर्थहीन शब्दों एवं क्रमभंग अंकों को लिखकर दो सेकेण्ड बाद उन्हें मिटाकर, उनसे अर्थहीन शब्दों एवं क्रमभंग लिखे गये अंकों को दोहरवाना।

1.1.3. रचनात्मक क्रियाओं की संकल्पना

बच्चों में रचनात्मक कार्यों के प्रति विशेष रुचि होती है। अतः बच्चों की शिक्षा में हस्तकार्य पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। विद्यालय में उन क्रियाओं और गतिविधियों का आयोजन किया जाना चाहिए जिनसे कि बच्चों में सामाजिकता का विकास हो तथा उनमें आत्म नियंत्रण, सहानुभूति, प्रतियोगिता तथा सहयोग आदि गुणों का विकास संभव हो। पढ़ने तथा रचनात्मक लेखन एवं चिन्तन की आदत का विकास करना। रचनात्मक क्रियाओं के अन्तर्गत निम्नलिखित क्रियाओं का आयोजन विद्यालय में किया जा सकता है जैसे– कागज की पतंग बनाना, कागज की नाव बनाना।

- विभिन्न आकृतियों की पहचान कराना।
- चित्रकारी कराना।
- रंग भरवाना।
- मिट्टी के कार्य करवाना।
- सामूहिक क्रियाओं का आयोजन।
- विभिन्न खेलों का आयोजन।
- अन्त्याक्षरी कराना।
- बाल सभा में भागीदारी।
- राष्ट्रीय पर्वों पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भागीदारी।

1.1.0. समस्या का औचित्य

संगीत व सीखने को लेकर पूर्व में भी अनेक अध्ययन विभिन्न शोधार्थियों द्वारा सम्पन्न किये जा चुके हैं, यथा– वार्नर (1982) ने पूर्व विद्यालयी कक्षाओं में संगीत की आवश्यकता का अध्ययन किया। मैकडोनाल्ड व अन्य (1982) ने बालकों की शिक्षा के पाठ्यक्रम में संगीत की आवश्यकता का अध्ययन किया। डे (1994) ने बताया कि संगीत पाठ्यक्रम के सभी भागों को स्वाभाविक रूप से समाविष्ट कर सकता है। पाल्मर (2001) ने पाया कि संगीत मस्तिष्क के विभिन्न भागों को सक्रिय करता है। रोनाल्ड (2003) ने संगीत का प्रयोग सीखने में सुधार हेतु किया। ल्यूरल जे. ट्रेनर व अन्य (2012) ने नवजात बालकों के मस्तिष्क और व्यवहार पर संगीत

का प्रभाव देखा। एस. हेलम एवं ए. कोटसपोलू (2004) ने पृष्ठभूमि संगीत का प्रभाव सीखने, कार्य और व्यवहार पर देखा। टेलर जे. स्टीफेन्स (2010) ने शास्त्रीय एवं रॉक संगीत का स्मृति पर प्रभाव देखा। ऐमिली कोनाट्ज (2012) ने शब्द सूची की स्मृति के लिए संगीत के प्रभाव का अध्ययन किया। निकोलस डिग्लीडिस व अन्य (2014) ने अतुल्यकालिक (Asynchronous) संगीत का प्रभाव छात्र पाठ संतुष्टि और प्रेरणा पर देखा। ब्रेट डी. जोन्स (2009) ने अध्ययन में व्यस्त रखने के लिए छात्रों को प्रेरित करना : शैक्षिक प्रेरणा का संगीत प्रतिमान। जेम्स आर्थर (1981) ने सृजनात्मकता पर आरामदायक प्रशिक्षण और संगीत के प्रभावों का अध्ययन किया। अराइल एस. डी. (2013) ने संज्ञानात्मक प्रदर्शन पर संगीत सुनने के प्रभाव का अध्ययन किया।

पूर्व में आयोजित अनेक अध्ययनों के परिणामों से स्पष्ट होता है कि संगीत का सकारात्मक प्रभाव बालकों के सीखने, अध्ययन आदतों, स्मृति पर पड़ता है। अध्ययन के परिणामों से यह भी पाया गया है कि संगीत जहां थकान दूर करने, दुशिचिंता को मिटाने का काम करता है वहीं कार्य व्यवहार में नवीनता और ताजगी लाता है। अलग–अलग तरह का संगीत, धीमी आवाज का संगीत, तेज आवाज का संगीत सभी संगीत व्यक्ति के मस्तिष्क पर अलग–अलग प्रभाव डालते हैं। भिन्न–भिन्न लोग भिन्न–भिन्न प्रकार का संगीत सुनते हैं और आनंद की अनुभूति करते हैं, कुछ लोग काम करते हुए अथवा पढ़ते समय अधिकतर गणित की समस्याओं को हल करते समय पृष्ठभूमि सुनते हैं जो अत्यन्त प्रभावकारी पाया गया है। अतः शोधार्थिनी के मस्तिष्क में कुछ स्वाभाविक जिज्ञासायें उत्पन्न हुईं जैसे– मंद बुद्धि बालक संगीत में किस प्रकार की रुचि लेते हैं? क्या मंद बुद्धि बालक पृष्ठभूमि संगीत के साथ पढ़ने में रुचि लेते हैं ? क्या मंद बुद्धि बालक पृष्ठभुमि संगीत के साथ जल्दी सीखते हैं ? क्या मंद बुद्धि बालकों के लिए संगीत उपलब्धि प्रेरणा को बढ़ाता है ? क्या संगीत सुनते समय मंद बुद्धि बालकों का ध्यान पढ़ने में लगता है अथवा नहीं? एवं मंद बुद्धि बालकों की रचनात्मक क्रियाओं में संगीत से कुछ सकारात्मक योगदान प्राप्त होगा ? आदि अनेक जिज्ञासाओं की शांति हेतु शोधार्थिनी ने इस समस्या का चुनाव किया।

1.2.0. समस्या कथन

''मन्द बुद्धि बालकों की उपलब्धि अभिप्रेरणा, ध्यान केन्द्रण एवं रचनात्मक क्रियाओं पर संगीत आधारित खेल विधि के प्रभाव का अध्ययन''

1.3.0. समस्या में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण

1.3.1. मन्द बुद्धि बालक

क्रो एवं क्रो के अनुसार, ''जिन बालकों की बुद्धिलब्धि 70 से कम होती है, उनको मन्दबुद्धि बालक कहते हैं।''

पोलक व पोलक के अनुसार, ''मन्द बुद्धि बालक को अब क्षीण बुद्धि बालकों के समूह में नहीं रखा जाता है, जिनके लिए कुछ भी नहीं किया जा सकता है। अब हम यह स्वीकार करते हैं कि उनके व्यक्तित्व के उतने ही विभिन्न पहलू होते हैं, जितने सामान्य बालकों के व्यक्तित्व के हैं''

कार्यात्मक परिभाषा

मन्द बुद्धि बालक से तात्पर्य ऐसे बालकों से है जिनकी बुद्धिलब्धि 70–80 या उससे भी कम है।

1.3.2. उपलब्धि अभिप्रेरणा

उपलब्धि अभिप्रेरणा से तात्पर्य बालकों की कक्षागत उपलब्धि में उन्नति हेतु प्रदान की जाने वाली अभिप्रेरणा से है, जिससे प्रेरित होकर बालक सीखने हेतु तत्पर हो सकें।

1.3.3. ध्यान केन्द्रण

मॉर्गन एवं गिलिलैन्ड के शब्दों में ''अपने वातावरण के किसी तत्व की ओर उत्साहपूर्वक जागरूक होना ध्यान कहलाता है। यह किसी अनुक्रिया के लिये पूर्व समायोजन है।''

कार्यात्मक परिभाषा

ध्यान प्रक्रिया से तात्पर्य बालक का किसी वस्तु पर चेतना को केन्द्रित करने की मानसिक क्रिया से है।

1.3.4. रचनात्मक क्रियायें

रचनात्मक क्रियाओं से तात्पर्य बालकों द्वारा किये जाने वाले रचनात्मक कार्यों से है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में रचनात्मक क्रिया से अभिप्राय मन्दबुद्धि बालकों की कक्षागत विभिन्न शिक्षण–अधिगम संबंधी क्रियाओं में व रचनात्मक सम्बन्धी कार्यों में ज्ञानात्मक, भावात्मक व मनोगत्यात्मक रूप से सक्रिय होकर भाग लेना है।

1.4.0. अध्ययन के उद्देश्य

1. मन्द बुद्धि बालकों के लिए संगीत आधारित खेल विधि को विकसित करना।
2. मन्द बुद्धि बालकों की उपलब्धि अभिप्रेरणा पर संगीत आधारित खेल विधि के प्रभाव का अध्ययन करना।
3. मन्द बुद्धि बालकों के ध्यान केन्द्रण पर संगीत आधारित खेल विधि के प्रभाव का अध्ययन करना।
4. मन्द बुद्धि बालकों की रचनात्मक क्रियाओं पर संगीत आधारित खेल विधि के प्रभाव का अध्ययन करना।

1.5.0. अध्ययन की परिकल्पनायें

अध्ययन सम्बन्धी उपरोक्त उद्देश्यों के सन्दर्भ में शोधार्थिनी द्वारा निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं का निर्धारण किया गया है–

1. मन्द बुद्धि बालकों की उपलब्धि अभिप्रेरणा पर संगीत आधारित खेल विधि का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

2. मन्द बुद्धि बालकों के ध्यान केन्द्रण पर संगीत आधारित खेल विधि का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

3. मन्द बुद्धि बालकों की रचनात्मक क्रियाओं पर संगीत आधारित खेल विधि का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

1.6.0. अध्ययन की परिसीमाएँ

प्रस्तुत अध्ययन की निम्नलिखित परिसीमाऐं रहेंगी–

1. प्रस्तुत अध्ययन प्रारम्भिक स्तर की कक्षाओं के विद्यार्थियों तक ही सीमित रहेगा।
2. प्रस्तुत अध्ययन केवल मन्दबुद्धि बालकों तक ही सीमित रहेगा।
3. प्रस्तुत अध्ययन का क्षेत्र आगरा शहर के उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से मान्यता प्राप्त विद्यालय ही रहेगा।

1.7.0. अध्ययन में प्रयुक्त चर

2. स्वतन्त्र चर – संगीत आधारित खेल विधि।
3. आश्रित चर – उपलब्धि अभिप्रेरणा, ध्यान केन्द्रण एवं रचनात्मक क्रियायें।
4. नियंत्रित चर – कक्षा, लिंग, आयु, विद्यालय, क्षेत्र आदि।

1.9.0. अध्ययन प्रारूप तथा प्रक्रिया

अध्ययन उद्दश्यों की प्राप्ति हेतु शोधार्थी द्वारा अध्ययन का कार्यात्मक प्रारूप तैयार किया जायगा। अध्ययन प्रारूप का वर्णन अध्ययन विधि, अध्ययन हेतु न्यादर्श, अध्ययन उपकरण, तथा अध्ययन हेतु सांख्यिकीय विधियाँ शीर्षकों के अन्तर्गत किया गया है–

1.9.1. अध्ययन विधि

अध्ययन में शोधार्थी द्वारा मन्दबुद्धी बालकों की उपलब्धि अभिप्रेरणा, ध्यान केन्द्रण एवं रचनात्मक क्रियाओं पर संगीत आधारित खेल विधि के प्रभाव के अध्ययन हेतु प्रयोगात्मक शोध विधि का प्रयोग किया जाएगा। प्रयोगात्मक शोध विधि कार्य–कारण सम्बन्ध को प्रकट करने वाली

परिकल्पना के परीक्षण की विधि है जिसमें नियंत्रित परिस्थितियों में कार्य–कारण संबंध का सम्पादन किया जाता है। प्रयोगात्मक पद्धति में इस बात का वर्णन व विश्लेषण किया जाता है कि सावधानी पूर्वक नियंत्रित की गई दशाओं में क्या घटित हो सकता है?

1.9.2. अध्ययन का संरचनात्मक प्रारूप

प्रस्तुत अध्ययन में शोधार्थिनी द्वारा निर्धारित लक्ष्य की ओर अग्रसर होने के उद्देश्य से तथा शोध प्रक्रिया को दृष्टिगत रखते हुए प्रयोगात्मक पद्धति के प्रचिलित प्रारूप पूर्व तथा पश्च परीक्षण समानान्तर समूह प्रारूप का प्रयोग किया जाएगा, जिसमें संबद्ध सभी प्रासंगिक पक्षों की दृष्टि से समान दो या अधिक समूहों के आधार पर किन्हीं दो परिस्थितियों के सापेक्षिक प्रभाव की तुलना की जाती है। शोधार्थिनी द्वारा संगीत आधारित खेल विधि का प्रयोगात्मक एवं अप्रयोगाात्मक समूह पर सापेक्षिक प्रभाव की तुलना उपलब्धि अभिप्रेरणा,ध्यान केन्द्रण, रचनात्मक क्रियाओं के सन्दर्भ में की जाएगी।

तालिका. 1. अध्ययन का संरचनात्मक प्रारूप

स्मूह	पूर्व परीक्षण	डपचार	पश्च परीक्षण
प्रयोगात्मक समूह	• उपलब्धि अभिप्रेरणा, • ध्यान केन्द्रण, • रचनात्मक क्रियाऐं	संगीत आधारित खेल विधि	• उपलब्धि अभिप्रेरणा, • ध्यान केन्द्रण, • रचनात्मक क्रियाऐं
अप्रयोगात्मक समूह		परम्परागत शिक्षण	

1.10.0. अध्ययन का जनसंख्या एवं न्यादर्श

शोधार्थिनी द्वारा अध्ययन हेतु सोद्देश्य न्यादर्शन विधि द्वारा उत्तरप्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद् द्वारा संचालित प्रारम्भिक स्तर की कक्षाओं में अध्ययनरत मन्दबुद्धि बालकों का चयन किया जायेगा। शोधार्थिनी द्वारा बालकों पर सामूहिक बुद्धि परीक्षण का प्रशासन कर निम्न बुद्धिलब्धि वाले 80 बालकों का चयन अध्ययन के न्यादर्श के रूप में किया जायेगा। न्यादर्श में सम्मिलित 80

बालकों को यादृच्छीकरण द्वारा 40–40 बालकों के दो समूहों प्रयोगात्मक एवं नियंत्रित में विभाजित किया जाएगा। न्यादर्श चयन प्रक्रिया का रेखाचित्रीय निरूपण निम्न प्रकार है–

तालिका सं. 3 न्यादर्श चयन

विद्यालय	बलक	स्मूह	बालकों की संख्या
सोद्देश्य न्यादर्श	यादृच्दिक न्यादर्शन	नियंत्रित समूह	40
		प्रयोगात्मक समूह	40
		कुल संख्या	80

1.11.0. अध्ययन विधि

प्रस्तावित अध्ययन की पूर्ति हेतु प्रयोगात्मक विधि का प्रयोग किया जायेगा। इसके अन्तर्गत न्यादर्श को दो समूहों अप्रयोगात्मक समूह एवं प्रयोगात्मक समूह में विभक्त कर अध्ययन किया जायेगा।

1.12.0. अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन की पूर्ति हेतु शोधार्थिनी द्वारा निम्नलिखित मानकीकृत उपकरणों का प्रयोग किया जायेगा–

1. आर.के. टंडन द्वारा निर्मित सामूहिक मानसिक योग्यता परीक्षण।
2. प्रतिभा देव एवं आशा मोहन (2012) द्वारा निर्मित अचीवमेंट मोटिवेशन टेस्ट प्रोजेक्टिव।
3. स्पान ऑफ इमीडिएट मैमोरी
4. रचनात्मक क्रियाओं के मापन हेतु स्वनिर्मित उपकरण का प्रयोग शोध हेतु किया जायेगा।

1.13.0. सांख्यिकीय प्रविधियां

प्रयोग तथा उपकरणों से प्राप्त सूचनाओं व प्रदत्तों के आधार पर शोधकार्य संबंधी उपलब्धियों तथा परिणामों का निरूपण करने हेतु आवश्यकतानुसार वर्णनात्मक व निष्कर्षात्मक सांख्यिकी का प्रयोग किया जाएगा।

1.13.1. वर्णनात्मक सांख्यिकी

वर्णनात्मक सांख्यिकी द्वारा विभिन्न उपकरणों से प्राप्त आंकड़ों की प्रकृति का ज्ञान करने हेतु, विस्तृत आंकड़ों का संक्षिप्त चित्र प्रस्तुत करने के उद्देष्य से निम्न सांख्यिकीय गणनाओं का प्रयोग किया जाएगा–

1. मध्यमान
2. प्रामाणिक विचलन
3. रेखाचित्रीय प्रदर्शन

1.13.2. निष्कर्षात्मक सांख्यिकी

1. टी–परीक्षण

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

निकोलस डी. व अन्य (2014). इफेक्ट्स ऑफ एज्नक्रोनस म्यूजिक ऑन स्टूडेंट्स लेसन सेटिस्फेक्शन एण्ड मोटिवेशन एट द सिचुएशनल लेवल. *जर्नल ऑफ टीचिंग इन फिजीकल एजुकेशन*, 2014, 33

अराइल एस. डी. (2013) द इम्पेक्ट ऑफ लिसनिंग टू म्यूजिक ऑन कॉगनेटिव परफॉर्मेंस, *स्टूडेंटप्लस,* वा. 5 नं. 9

ऐमिली कोनाट्ज (2012). द इफेक्टस ऑफ म्यूजिक ऑन मेमोरी फॉर अ वर्ल्ड लिस्ट. *द ह्यूरोन यूनिवर्सिटी कॉलेज जर्नल ऑफ लर्निंग एण्ड मोटिवेशन.* वॉ. 50 नं. 1.

ल्यूरल जे. ट्रेनर व अन्य (2012). बिकमिंग म्यूजिकली इनकल्चर्ड : इफैक्ट्स ऑफ म्यूजिक क्लासेस फॉर इनफेंट्स ऑन ब्रेन एण्ड बिहेवियर,, एनल्स ऑफ द न्यूयॉर्क एकेडमी ऑफ साइंसेज, *द न्यूरोसाइंसेज एण्ड म्यूजिक : लर्निंग एण्ड मेमोरी.*

टेलर जे. स्टीफेन्स (2010). द इफेक्ट्स ऑफ क्लासिकल एण्ड रॉक म्यूजिक ऑन मेमोरी, *केलिपोर्निया स्टेट स्टेट साइंस फेअर,* प्रोजेक्ट समरी.

ब्रेट डी. जोन्स (2009) मोटिवेटिंग स्टूडेंट्स टू इंगेज इन लर्निंग : द म्यूजिक मॉडल ऑफ ऐकेडमिक मोटिवेशन, *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ टीचिंग एण्ड लर्निंग इन हायर एजुकेशन*, वॉ. 21. नं. 2.

भार्गव, महेश (2007). साइकोलॉजिकल टेस्टस एण्ड एजुकेशनल स्केल्स. *नेशनल साइकोलॉजिकल कॉर्पोरेशन*, आगरा.

गुप्ता, एस.पी. (2007). *व्यवहार विज्ञानों में सांख्यिकीय विधियाँ.* शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद.

अस्थाना, विपिन एवं अस्थाना श्वेता (2005). *मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन*, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा.

टेरेसा, एल. (2005). द इफेक्ट ऑफ म्यूजिक लिसिनिंग ऑन द वर्क परफॉर्मेंस, *साइकोलॉजी ऑफ म्यूजिक,* सेज पब्लिकेशन.

सू हेलम एवं ए. कोटसपोलू (2004) द इफैक्ट्स ऑफ बेकग्राउंड म्यूजिक ऑन लर्निंग, *परफार्मेंस एण्ड बिहेवियर, इन्स्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन,* यूनिवर्सिटी ऑफ लन्दन.

गोल्डिस्टीन, जेफरी (2003). कॉन्ट्रीब्यूशन्स ऑफ प्ले एण्ड टॉयज टू चाइल्ड डेवलपमेंट, *टॉय इन्डस्ट्रीज ऑफ यूरोप*, ब्रुसेल्स.

रोनाल्ड ए. (2003) यूज ऑफ टेक्नॉलॉजी एण्ड म्यूजिक टू इम्प्रूव लर्निंग, प्रोफेसर ऐमरेटस, *बायोस्टेटिक्स एण्ड मेजरमेंट एट हॉपकिंस यूनिवर्सिटी.*

पाल्मर (2001). ऑल म्यूजिक इज मेड अप ऑफ द फंडामेंटल बिल्डिंग ब्लॉक्स ऑफ मेलॉडी, रिदम एण्ड हारमोनी.

बाकर, एम.ए. व अन्य (1993). द इफेक्ट्स ऑफ नोइज एण्ड स्पीच ऑन कॉगनेटिव टास्क परफार्मेंस, *जर्नल ऑफ जनरल साइकोलॉजी.*

मैकडोनाल्ड एवं रामसे (1982). म्यूजिक सुड वी इनक्लूडेड डेली इन द क्यूरिकलम फॉर इनफेंट्स एण्ड अदर चिल्ड्रेन

जेम्स आर्थर (1981) द इफैक्टस ऑफ रिलेक्शेसन ट्रेनिंग एण्ड म्यूजिक अपऑन क्रिएटिविटी, *ग्रेजुएट फेकल्टी ऑफ टेक्सॉस टेक यूनिवर्सिटी.*